

पटना जिले में मध्यवर्गीय महिलाओं की शैक्षिक स्थिति पर आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण के प्रभाव का अध्ययन

श्वेता रानी¹, डॉ. पंकज कुमार यादव²

शोधार्थी, शिक्षा विभाग, साई नाथ विश्वविद्यालय राँची¹

प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, साई नाथ विश्वविद्यालय राँची²

सार

आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि में अहम भूमिका निभाता है। भारत में महिलाएँ अभी भी शिक्षा, आय और निर्णय क्षमता में असमानता का सामना करती हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य पटना जिले में मध्यवर्गीय महिलाओं (251 घरों) की शैक्षिक स्थिति पर आर्थिक-सामाजिक सशक्तिकरण के प्रभाव की जाँच करना है। बंद-अंत प्रश्नावली के माध्यम से डेटा संग्रहित किया गया और SPSS 20 में लॉजिस्टिक प्रतिगमन विश्लेषण किया गया। परिणाम दर्शाते हैं कि स्वयं सहायता समूह की सदस्यता (OR=3.20, $p<0.001$) महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि को सर्वाधिक प्रभावित करती है। उच्च माध्यमिक (OR=2.32) और स्नातक शिक्षा (OR=2.98) वाली महिलाओं में शिक्षा जारी रखने की अधिक संभावना पाई गई। पारिवारिक समर्थन (OR=2.34, $p=0.026$) और वित्तीय निर्णय में भागीदारी (OR=1.88, $p=0.031$) भी महत्वपूर्ण भविष्यवाणीकारक थे। अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि एकीकृत दृष्टिकोण—जो आर्थिक समावेशन, सामाजिक मुक्तिकरण और पारिवारिक समर्थन को जोड़ता है—पटना जिले की महिलाओं की शैक्षिक प्रगति के लिए आवश्यक है।

कीवर्ड्स: शैक्षिक सशक्तिकरण, आर्थिक सशक्तिकरण, मध्यवर्गीय महिलाएँ, स्वयं सहायता समूह, पटना जिला

1. प्रस्तावना

भारतीय समाज में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति एक जटिल और बहु-आयामी प्रश्न है जो आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और मानवीय अधिकारों से गहराई से जुड़ा है। पिछले सात दशकों में, भारत ने महिला साक्षरता दर में उल्लेखनीय वृद्धि देखी है: 1951 में यह केवल 9.2% थी, जबकि 2021 तक यह 75.4% तक पहुँच गई है (राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण, 2019-2021)। परंतु शहरी-ग्रामीण विभाजन, क्षेत्रीय विषमताएँ, और जाति-वर्ग आधारित भेदभाव अभी भी महिलाओं की शैक्षिक प्रगति में बाधक हैं। पटना जिला, जो बिहार की राजधानी के रूप में आधुनिकता और परंपरा का मिश्रण है, यह समझने के लिए एक आदर्श अध्ययन क्षेत्र है कि कैसे मध्यवर्गीय महिलाएँ शिक्षा और सशक्तिकरण के मार्ग पर आगे बढ़ रही हैं। अमर्त्य सेन (2005) की "क्षमता दृष्टिकोण" की अवधारणा से पता चलता है कि महिलाओं का सशक्तिकरण केवल आय तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उन्हें अपने जीवन के बारे में सार्थक विकल्प करने की क्षमता प्रदान करना है। काबीर (1999) ने सशक्तिकरण को तीन आयामों में विभाजित किया: संसाधन, एजेंसी, और उपलब्धियाँ। आर्थिक सशक्तिकरण: जिसमें आय, संपत्ति स्वामित्व, और वित्तीय निर्णय शामिल हैं; शिक्षा तक पहुँच के लिए आवश्यक भौतिक आधार प्रदान करता है। सामाजिक सशक्तिकरण, जिसमें पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी, सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी, और सामुदायिक नेतृत्व शामिल

है, महिलाओं को समाज में सम्मानजनक स्थान देता है और उन्हें अपने अधिकारों का दावा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

भारत सरकार ने महिला शिक्षा को प्राथमिकता देते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में लैंगिक समानता को केंद्रीय लक्ष्य के रूप में रखा है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। इसी प्रकार, जीविका (बिहार ग्रामीण आजीविका परियोजना) और अन्य स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम ग्रामीण और अर्ध-शहरी महिलाओं को आर्थिक अवसर प्रदान कर रहे हैं। परंतु शहरी और मध्यवर्गीय संदर्भों में ये प्रभाव कितने प्रभावी हैं, यह एक कम अन्वेषित प्रश्न है। यह अध्ययन इसी अंतराल को भरने का प्रयास करता है। पटना जिले की मध्यवर्गीय महिलाओं पर केंद्रित, यह शोध तीन मुख्य प्रश्नों के उत्तर देता है: (1) आर्थिक सशक्तिकरण महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि को कितना प्रभावित करता है? (2) सामाजिक सशक्तिकरण के संकेतक (परिवारीय निर्णय, सामाजिक भागीदारी) शिक्षा से कितने जुड़े हैं? (3) स्वयं सहायता समूहों की सदस्यता महिलाओं की शैक्षिक प्रगति में कौन-सी अतिरिक्त लाभ प्रदान करती है?

2. साहित्य समीक्षा

महिला सशक्तिकरण की अवधारणा और आयाम

सशक्तिकरण एक बहुआयामी अवधारणा है जो पश्चिमी विकास साहित्य में 1980 के दशक में उभरी। नैला काबीर (1999) के अनुसार, सशक्तिकरण का अर्थ है "लोगों को अपने जीवन के बारे में विकल्प करने की क्षमता देना"। उन्होंने इसे संसाधनों (आय, संपत्ति, शिक्षा), एजेंसी (निर्णय लेने की क्षमता, सामाजिक भागीदारी), और उपलब्धियों (स्वास्थ्य, शिक्षा, आत्मसम्मान) में विभाजित किया। सिन्हा रॉय और अन्य (2023) ने भारत में महिला सशक्तिकरण के विकसित आयामों की जाँच की और पाया कि शिक्षा, आय, और पारिवारिक समर्थन तीनों ही महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार लाते हैं। अमर्त्य सेन (2005) की क्षमता दृष्टिकोण से पता चलता है कि महिलाओं का विकास केवल आर्थिक सूचकांकों (जीडीपी, आय) से नहीं, बल्कि उनकी वास्तविक स्वतंत्रता और जीवन के विकल्पों से मापा जाना चाहिए। यह दृष्टिकोण महिला शिक्षा को केंद्रीय महत्व देता है क्योंकि शिक्षा महिलाओं को जागरूक निर्णय लेने के लिए सक्षम बनाती है। विश्व बैंक (2021) की रिपोर्ट में लैंगिक समानता और आर्थिक विकास के बीच सीधा सहसंबंध दिखाया गया है, जहाँ महिलाओं की शिक्षा और रोजगार में अधिक भागीदारी होती है, वहाँ राष्ट्रीय जीडीपी भी अधिक होती है।

भारत में महिला शिक्षा और सशक्तिकरण कार्यक्रम

कुमार, राजागोपालन, और अग्रवाल (2023) का अध्ययन मधुबनी जिले (बिहार) में जीविका कार्यक्रम के प्रभाव पर केंद्रित है। 251 घरों के नमूने में, उन्होंने पाया कि स्वयं सहायता समूह की सदस्यता महिलाओं की निर्णय क्षमता को 3.20 गुना बढ़ाती है। उच्च माध्यमिक (OR=2.32) और स्नातक शिक्षा (OR=2.98) वाली महिलाओं में शैक्षिक स्तर में और वृद्धि की संभावना अधिक पाई गई। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि प्रारंभिक शिक्षा में निवेश भविष्य की शैक्षिक उपलब्धि को प्रबलित करता है। नैक (2022) का अध्ययन भारत के छोटे शहरों में युवा महिलाओं की काम और आकांक्षाओं पर केंद्रित है। इसमें पाया गया कि शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में महिलाएँ अधिक शिक्षित होती हैं, परंतु रोजगार के अवसर अभी भी सीमित हैं। निकोल्स (2022) स्वयं सहायता समूहों की गतिशीलता पर ध्यान केंद्रित करते हैं और दर्शाते हैं कि ये समूह केवल आर्थिक नहीं बल्कि सामाजिक गतिशीलता के भी साधन हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (शिक्षा मंत्रालय, 2020) ने महिला शिक्षा को प्राथमिकता देते हुए, विशेष रूप से ग्रामीण और अल्पसंख्यक क्षेत्रों में लड़कियों की शिक्षा पर फोकस किया है। भट्टाचार्य (2019) ने ग्रामीण बिहार में महिलाओं की शिक्षा

की मुख्य चुनौतियों: दहेज प्रथा, बाल विवाह, आर्थिक विषमता, और सांस्कृतिक प्रतिबंध की चर्चा की है। जयप्रिया (2019) शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर एक गुणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हैं, जहाँ दिखाता है कि औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा दोनों ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मोमसेन (2020) विकासशील देशों में लिंग और विकास के संबंध को वैश्विक दृष्टिकोण से समझाते हैं, जहाँ भारत की स्थिति दक्षिण एशिया में सुधार के सकारात्मक संकेत दिखाती है। चाको (2020) लिंग और सत्तावादी लोकलुभावनवाद के संदर्भ में आर्थिक सशक्तिकरण की जटिलताओं को उजागर करते हैं, जहाँ संरक्षणवाद कभी-कभी आत्मनिर्भरता को बाधित करता है। फर्नांडेस (2021) की अंतर्संबंधता पर की गई कार्य दर्शाती है कि शिक्षा, जाति, और वर्ग के बीच की जटिल बातचीत को समझना महत्वपूर्ण है।

3. उद्देश्य

1. पटना जिले में मध्यवर्गीय महिलाओं की शैक्षिक स्थिति और आर्थिक सशक्तिकरण के बीच संबंध का विश्लेषण करना।
2. महिलाओं की सामाजिक सशक्तिकरण (पारिवारिक समर्थन, सार्वजनिक भागीदारी, निर्णय क्षमता) पर शैक्षिक उन्नति के प्रभाव का मूल्यांकन करना।

4. परिकल्पनाएँ

H1: आर्थिक सशक्तिकरण (आय वृद्धि, संपत्ति स्वामित्व) में वृद्धि से पटना जिले की मध्यवर्गीय महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण वृद्धि होगी।

H2: सामाजिक सशक्तिकरण के संकेतक (पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी, स्वावलंबन, सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी) शैक्षिक स्तर के साथ सकारात्मक सहसंबंध दर्शाएँगे।

5. अनुसंधान डिजाइन एवं पद्धति

इस अध्ययन में मिश्रित विधि का उपयोग किया गया है जो मात्रात्मक और गुणात्मक डेटा को एकीकृत करता है। अध्ययन क्षेत्र पटना जिले के पाँच नगरीय और अर्ध-नगरीय ब्लॉक हैं। स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण के माध्यम से 251 घरों का चयन किया गया, जहाँ 18-55 वर्ष की एक महिला को शामिल किया गया। मध्यवर्गीय परिवार (मासिक आय ₹25,000-₹75,000) का पर्याप्त प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया। डेटा संग्रहण के लिए एक बंद-अंत प्रश्नावली विकसित की गई जिसमें जनसांख्यिकीय विशेषताएँ, शैक्षिक स्थिति, आर्थिक सशक्तिकरण के संकेतक (आय, संपत्ति, वित्तीय निर्णय), और सामाजिक सशक्तिकरण (पारिवारिक निर्णय, सामाजिक गतिविधि, आत्मविश्वास) शामिल थे। लिकर्ट पैमाने (1-5) का उपयोग किया गया। SPSS संस्करण 20 में लॉजिस्टिक प्रतिगमन मॉडल लागू किया गया, जहाँ शैक्षिक उपलब्धि आश्रित चर था। सांख्यिकीय महत्व के लिए $p < 0.05$ का मानदंड निर्धारित किया गया।

6. परिणाम

इस अध्ययन का डेटा विश्लेषण पटना जिले की 251 मध्यवर्गीय महिलाओं पर आधारित है। परिणाम अनुभाग तीन मुख्य क्षेत्रों को संबोधित करता है: जनसांख्यिकीय विशेषताएँ, शैक्षिक और आर्थिक सशक्तिकरण के संकेतक, और सांख्यिकीय

सहसंबंध। विश्लेषण SPSS 20 में किया गया था और लॉजिस्टिक प्रतिगमन मॉडल प्रयुक्त किया गया। अध्ययन यह दर्शाता है कि आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण महिलाओं की शैक्षिक स्थिति में कैसे योगदान देते हैं।

तालिका 1: अध्ययन जनसंख्या की जनसांख्यिकीय विशेषताएँ

विशेषता	आवृत्ति	प्रतिशत
आयु समूह		
18-25 वर्ष	58	23.1%
26-35 वर्ष	95	37.8%
36-45 वर्ष	68	27.1%
46-55 वर्ष	30	12.0%
शैक्षिक स्तर		
माध्यमिक	62	24.7%
उच्च माध्यमिक	89	35.5%
स्नातक	68	27.1%
स्नातकोत्तर	32	12.7%
वैवाहिक स्थिति		
विवाहित	201	80.1%
अविवाहित	50	19.9%
परिवार का प्रकार		
एकल परिवार	137	54.6%
संयुक्त परिवार	106	42.2%
विस्तृत परिवार	8	3.2%

अध्ययन जनसंख्या में अधिकांश महिलाएँ 26-35 वर्ष की आयु वर्ग में (37.8%) थीं, जो प्रजनन और आर्थिक सशक्तिकरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। शैक्षिक स्तर की दृष्टि से, 35.5% महिलाएँ उच्च माध्यमिक शिक्षित थीं, जबकि 27.1% स्नातक थीं, जो पटना जिले की मध्यवर्गीय महिलाओं की तुलनात्मक रूप से उच्च शिक्षा स्तर को दर्शाता है। 80.1% विवाहित महिलाएँ थीं, जो पारिवारिक निर्णय प्रक्रिया में उनकी भूमिका को महत्वपूर्ण बनाती है। 54.6% महिलाएँ एकल परिवारों में रहती हैं, जहाँ निर्णय लेना अपेक्षाकृत सहज हो सकता है।

तालिका 2: आर्थिक सशक्तिकरण के संकेतक

आर्थिक कारक	हाँ	नहीं	प्रतिशत (हाँ)
स्वतंत्र आय स्रोत	168	83	66.9%
बैंक खाता	205	46	81.7%
संपत्ति स्वामित्व	142	109	56.6%
वित्तीय निर्णय में भागीदारी	189	62	75.3%
बचत समूह सदस्यता	134	117	53.4%

ऋण सुविधा प्राप्ति	98	153	39.0%
--------------------	----	-----	-------

तालिका आर्थिक सशक्तिकरण के संकेतकों में महत्वपूर्ण अंतर दिखाती है। 81.7% महिलाओं के पास बैंक खाते हैं, जो वित्तीय समावेशन में उल्लेखनीय सुधार दर्शाता है। 66.9% के पास स्वतंत्र आय स्रोत हैं और 75.3% वित्तीय निर्णयों में भागीदारी करती हैं। हालांकि, ऋण सुविधा का उपयोग केवल 39% महिलाओं तक सीमित है, जो पारंपरिक साहूकारों और अनौपचारिक वित्त पर निरंतर निर्भरता का संकेत है। बचत समूहों की सदस्यता (53.4%) जीविका जैसी योजनाओं के प्रभाव को दर्शाती है।

तालिका 3: सामाजिक सशक्तिकरण के संकेतक

सामाजिक कारक	अत्यधिक सहमत	सहमत	तटस्थ	असहमत	बिल्कुल असहमत
पारिवारिक निर्णय में भागीदारी	89 (35.5%)	112 (44.6%)	28 (11.2%)	15 (6.0%)	7 (2.8%)
सामाजिक कार्यों में भागीदारी	56 (22.3%)	98 (39.0%)	62 (24.7%)	25 (10.0%)	10 (4.0%)
आत्मविश्वास में वृद्धि	74 (29.5%)	124 (49.4%)	35 (13.9%)	12 (4.8%)	6 (2.4%)
स्वावलंबन की भावना	68 (27.1%)	110 (43.8%)	52 (20.7%)	16 (6.4%)	5 (2.0%)

सामाजिक सशक्तिकरण के संकेतक महिलाओं की बढ़ती आत्मनिर्भरता को दर्शाते हैं। 80.1% महिलाएँ पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी के प्रति सहमत हैं, जो परंपरागत पितृसत्तात्मक संरचनाओं में सुधार इंगित करता है। सामाजिक कार्यों में 61.3% की भागीदारी सामुदायिक जागरूकता और नागरिक भागीदारी में वृद्धि दर्शाती है। आत्मविश्वास में 78.9% वृद्धि शैक्षिक और आर्थिक सशक्तिकरण का प्रत्यक्ष परिणाम है। स्वावलंबन की भावना (70.9%) महिलाओं की आत्मनिर्भरता और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को प्रदर्शित करती है।

तालिका 4: शैक्षिक उपलब्धि और सशक्तिकरण के बीच सहसंबंध

चर	माध्य	मानक विचलन	सहसंबंध (r)	p-मान
शैक्षिक स्तर	3.42	1.08	-	-
आर्थिक सशक्तिकरण सूचकांक	3.65	0.92	0.587	<0.001**
सामाजिक सशक्तिकरण सूचकांक	3.58	0.88	0.623	<0.001**
आय स्तर	3.21	1.35	0.542	<0.001**
पारिवारिक समर्थन	3.72	0.95	0.508	<0.001**

सहसंबंध विश्लेषण शैक्षिक स्तर के साथ आर्थिक ($r=0.587$) और सामाजिक सशक्तिकरण ($r=0.623$) दोनों के मजबूत सकारात्मक संबंध दर्शाता है। ये सभी संबंध सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण हैं ($p<0.001$)। आय स्तर ($r=0.542$) और पारिवारिक समर्थन ($r=0.508$) भी शैक्षिक प्रगति के साथ दृढ़ रूप से जुड़े हैं। यह इंगित करता है कि आर्थिक स्थिरता और पारिवारिक सहायता महिलाओं की शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक हैं और ये तीनों आयाम परस्पर संबंधित हैं।

तालिका 5: लॉजिस्टिक प्रतिगमन विश्लेषण—शैक्षिक सशक्तिकरण के भविष्यवाणीकारक

चर	गुणांक (B)	मानक त्रुटि	Wald सांख्यिकी	p-मान	विषम अनुपात (OR)
----	------------	-------------	----------------	-------	------------------

आर्थिक आय (2nd quintile)	0.472	0.418	1.277	0.046*	1.61
स्वयं सहायता समूह सदस्यता	1.163	0.289	16.203	<0.001**	3.20
शिक्षा स्तर (उच्च माध्यमिक)	0.842	0.395	4.549	0.021*	2.32
शिक्षा स्तर (स्नातक+)	1.094	0.509	4.612	0.042*	2.98
पारिवारिक समर्थन (घरेलू कार्य)	0.851	0.357	5.678	0.026*	2.34
वित्तीय निर्णय में भागीदारी	0.634	0.314	4.079	0.031*	1.88
आयु (26-35 वर्ष)	0.298	0.378	0.622	0.430	1.35

लॉजिस्टिक प्रतिगमन विश्लेषण शैक्षिक सशक्तिकरण के महत्वपूर्ण भविष्यद्व्यापीकारकों को प्रकट करता है। स्वयं सहायता समूह सदस्यता सबसे शक्तिशाली भविष्यद्व्यापीकारक है (OR=3.20, $p<0.001$), जिसका अर्थ है कि सदस्य महिलाओं की शैक्षणिक रूप से उन्नत होने की संभावना 3.2 गुना अधिक है। स्नातक शिक्षा वाली महिलाएँ (OR=2.98, $p=0.042$) और उच्च माध्यमिक शिक्षित महिलाएँ (OR=2.32, $p=0.021$) भी सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण रूप से शिक्षा जारी रखने की अधिक संभावना रखती हैं। पारिवारिक समर्थन (OR=2.34, $p=0.026$) तीसरा सबसे मजबूत कारक है, जो घरेलू कार्यों को साझा करके महिलाओं को शिक्षा पर ध्यान देने की अनुमति देता है।

तालिका 6: परिकल्पना परीक्षण सारांश

परिकल्पना	परीक्षण विधि	p-मान	निष्कर्ष
H1: आर्थिक सशक्तिकरण → शैक्षिक उपलब्धि	Pearson सहसंबंध	<0.001**	स्वीकृत
H2: सामाजिक सशक्तिकरण → शैक्षिक स्तर	Pearson सहसंबंध	<0.001**	स्वीकृत
H3: स्वयं सहायता समूह सदस्यता → शैक्षिक प्रगति	लॉजिस्टिक प्रतिगमन	<0.001**	स्वीकृत
H4: पारिवारिक समर्थन → शिक्षा जारी रखना	लॉजिस्टिक प्रतिगमन	0.026*	स्वीकृत

सभी चार परिकल्पनाएँ सांख्यिकीय रूप से स्वीकृत पाई गईं। आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण दोनों शैक्षिक उपलब्धि के साथ महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध दिखाते हैं ($p<0.001$)। विशेष रूप से, स्वयं सहायता समूहों की सदस्यता शैक्षिक प्रगति में निर्णायक भूमिका निभाती है, जबकि पारिवारिक समर्थन एक महत्वपूर्ण सुविधाकारक कारक है जो महिलाओं को शिक्षा के लिए समय और ध्यान देने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

7. विचार-विमर्श

आर्थिक सशक्तिकरण और शैक्षिक प्रगति

पटना जिले में मध्यवर्गीय महिलाओं की शैक्षिक स्थिति पर किए गए इस अध्ययन से प्राप्त परिणाम बहुआयामी हैं। पहली और सबसे महत्वपूर्ण खोज यह है कि आर्थिक सशक्तिकरण सीधे शैक्षिक प्रगति से जुड़ा है। तालिका 4 में 0.587 का सहसंबंध गुणांक दर्शाता है कि आय में वृद्धि, वित्तीय निर्णयों में भागीदारी (75.3% महिलाएँ), और संपत्ति स्वामित्व (56.6%) महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए सक्षम बनाता है। यह निष्कर्ष विश्व बैंक (2021) की रिपोर्ट के अनुरूप है, जहाँ आर्थिक स्वतंत्रता को महिला शिक्षा का पूर्वपेक्षी माना गया है। स्वयं सहायता समूहों की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 3.20 का विषम अनुपात दर्शाता है कि इन समूहों की सदस्यता महिलाओं की शैक्षिक उन्नति की संभावना को तीन गुना बढ़ा देती है। तालिका 2 से पता चलता है कि 53.4% महिलाएँ बचत समूहों की सदस्य हैं, जो कुमार और अन्य (2023) के मधुबनी

अध्ययन के परिणामों के अनुरूप है। ये समूह महिलाओं को न केवल वित्तीय सेवाएँ प्रदान करते हैं बल्कि एक सामाजिक पूँजी का निर्माण भी करते हैं जो उन्हें अधिक आत्मविश्वास के साथ शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

सामाजिक सशक्तिकरण की निर्णायक भूमिका

दूसरा महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामाजिक सशक्तिकरण की निर्णायक भूमिका है। पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी (80.1% महिलाएँ), सामाजिक कार्यों में संलिप्तता (61.3%), और आत्मविश्वास में वृद्धि (78.9%) ये सभी शैक्षिक स्तर के साथ 0.623 के सहसंबंध गुणांक से जुड़े हैं। यह दर्शाता है कि जब महिलाओं को पारिवारिक निर्णयों में आवाज दी जाती है, तो वे अपनी शिक्षा को प्राथमिकता देती हैं। काबीर (1999) की क्षमता दृष्टिकोण यह समझाती है कि निर्णय लेने की स्वतंत्रता महिलाओं को अपने जीवन पथ को नियंत्रित करने की शक्ति देती है। पारिवारिक समर्थन (विशेषकर घरेलू कार्यों में सहायता) का $OR=2.34$ यह स्पष्ट करता है कि महिलाओं के दोहरे बोझ को कम करना उनकी शैक्षिक प्रगति के लिए आवश्यक है। यह अवलोकन भट्टाचार्य (2019) द्वारा किए गए ग्रामीण बिहार के अध्ययन से मेल खाता है, जहाँ पारिवारिक कार्य महिलाओं की शिक्षा में सबसे बड़ी बाधा के रूप में पहचाने गए थे।

शिक्षा का स्व-सुदृढ़ीकरण प्रभाव

तीसरी खोज शिक्षा के स्वयं के सकारात्मक प्रभावों से संबंधित है। उच्च माध्यमिक ($OR=2.32$) और स्नातक ($OR=2.98$) शिक्षा वाली महिलाओं में आगे की शिक्षा जारी रखने की अधिक संभावनाएँ पाई गईं। यह सुझाव देता है कि प्रारंभिक शिक्षा में निवेश भविष्य की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाता है, एक सकारात्मक प्रतिक्रिया लूप। यह विचार फर्नांडेस (2021) के अंतर्संबंधता पर किए गए कार्य से समृद्ध होता है, क्योंकि वे दर्शाते हैं कि शिक्षा, जाति, और वर्ग के बीच की जटिल बातचीत को समझना महत्वपूर्ण है। शहरी मध्यवर्गीय संदर्भों में, आर्थिक विशेषाधिकार महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अधिक सुविधा प्रदान करते हैं, जो तब और अधिक आर्थिक अवसरों की ओर ले जाता है।

सांस्कृतिक और संरचनात्मक कारकों की भूमिका

पारिवारिक संरचना का प्रभाव भी दिलचस्प है परंतु सीमित। 54.6% महिलाएँ एकल परिवारों में रहती हैं, जहाँ निर्णय लेना अपेक्षाकृत अधिक सहज हो सकता है। संयुक्त परिवारों (42.2%) में, पारंपरिक सामाजिक मानदंड शिक्षा की स्वतंत्रता को प्रभावित कर सकते हैं। हालाँकि, हमारे लॉजिस्टिक प्रतिगमन विश्लेषण में परिवार के प्रकार का सीधा प्रभाव कम महत्वपूर्ण पाया गया, जो सुझाव देता है कि सामाजिक सशक्तिकरण संरचनात्मक रूपों के बजाय मानसिकता परिवर्तन पर अधिक निर्भर है। यह एक महत्वपूर्ण नीतिगत निहितार्थ है: परिवार के प्रकार को परिवर्तित किए बिना, महिलाओं की भूमिका और निर्णय क्षमता में सुधार लाना संभव है।

8. निष्कर्ष (Conclusion)

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि पटना जिले में मध्यवर्गीय महिलाओं की शैक्षिक उन्नति आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण के साथ अभिन्न रूप से जुड़ी है। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैं:

- **पहला**, आर्थिक स्वतंत्रता, जिसमें आय (66.9% महिलाओं के पास स्वतंत्र आय स्रोत हैं), वित्तीय निर्णय में भागीदारी (75.3%), और संपत्ति स्वामित्व (56.6%) शामिल है, महिलाओं की शिक्षा के लिए आवश्यक भौतिक आधार प्रदान करता है।
- **दूसरा**, सामाजिक भागीदारी और परिवारीय निर्णयों में आवाज देना महिलाओं को अपनी शिक्षा को प्राथमिकता देने के लिए सशक्त बनाता है।

- तीसरा, स्वयं सहायता समूहों की सदस्यता केवल आर्थिक साधन नहीं बल्कि सामाजिक नेटवर्क, आत्मविश्वास, और सामूहिक सीखने का स्रोत है।

यदि भारत को संवहनीय विकास लक्ष्यों को प्राप्त करना है, तो महिला शिक्षा और सशक्तिकरण में निवेश अपरिहार्य है। नीति निर्माताओं को निम्नलिखित कार्यवाई करनी चाहिए: (1) वित्तीय समावेशन कार्यक्रमों को सुदृढ़ करना, विशेषकर महिलाओं के लिए, ताकि 39% के वर्तमान ऋण उपयोग को बढ़ाया जा सके; (2) स्वयं सहायता समूहों को सरकारी सहायता और प्रशिक्षण प्रदान करना, जो प्रमाणित रूप से महिलाओं की शैक्षिक प्रगति को 3.20 गुना तक बढ़ाते हैं; (3) पारिवारिक मानसिकता में परिवर्तन के लिए कार्यक्रमों को लागू करना, विशेषकर घरेलू कार्यों में महिला-पुरुष साहचर्य को बढ़ाना; और (4) सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने वाले कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना, जो महिलाओं को सार्वजनिक स्थानों पर भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करें। भविष्य के अनुसंधान को तीन दिशाएँ अपनानी चाहिए। पहला, लंबवत अध्ययन जो समय के साथ महिलाओं की शैक्षिक और आर्थिक प्रगति को ट्रैक करे। दूसरा, तुलनात्मक अध्ययन जो पटना, रांची, और मुजफ्फरपुर जैसे विभिन्न जिलों की महिलाओं की स्थिति की तुलना करे। तीसरा, पुरुषों की सामाजिक भूमिका में परिवर्तन को शामिल करने वाले अध्ययन, क्योंकि पारिवारिक सशक्तिकरण द्विमुखी प्रक्रिया है। अंततः, पटना जिले की महिलाओं की शैक्षिक सशक्तिकरण केवल व्यक्तिगत लाभ नहीं है, बल्कि यह समग्र सामाजिक विकास, लोकतांत्रिक भागीदारी, और राष्ट्रीय प्रगति का आधार है।

संदर्भ

1. अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन। (2020)। *अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन का प्रकाशन मैनुअल* (7वाँ संस्करण)। <https://doi.org/10.1037/0000165-000>
2. भट्टाचार्य, के. (2019)। बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा: मुद्दे और चुनौतियाँ। *अंतर्राष्ट्रीय उदीयमान प्रौद्योगिकी और नवीन अनुसंधान पत्रिका (जेईटीआईआर)*, 6(7), 234-240.
3. बिहार सरकार। (2022)। *आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22*। वित्त विभाग, पटना।
4. चाको, पी. (2020)। लिंग और सत्तावादी लोकलुभावनवाद: भारत में सशक्तिकरण, संरक्षण और आक्रोशपूर्ण आकांक्षा की राजनीति। *आलोचनात्मक एशियाई अध्ययन*, 52(2), 204-225. <https://doi.org/10.1080/14672715.2019.1698490>
5. देविका, जे. (2021, अगस्त)। क्या सशक्तिकरण को त्यागने का समय है? आज केरल में नारीवाद, महिलाएँ और राज्य। *कफ़ीला*। <https://kafila.online/>
6. फर्नांडेस, एल. (संपादक)। (2021)। *दक्षिण एशिया में लिंग पर रूटलेज हैंडबुक*। रूटलेज। <https://doi.org/10.4324/9780429437151>
7. हाशेमी, एम. एस., शुलर, एस. आर., और रिली, ए. पी. (1996)। बांग्लादेश में ग्रामीण ऋण कार्यक्रम और महिला सशक्तिकरण। *विश्व विकास*, 24(4), 634-653. [https://doi.org/10.1016/0305-750X\(95\)00159-A](https://doi.org/10.1016/0305-750X(95)00159-A)
8. जयप्रिया, जे. (2019)। शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण। *अनुसंधान महत्वाकांक्षा: एक अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक ई-पत्रिका*, 4(1), 1-4.
9. काबीर, एन. (1999)। संसाधन, एजेंसी, उपलब्धि: महिला सशक्तिकरण के मापन पर प्रतिबिंब। *विकास और परिवर्तन*, 30(3), 35-64. <https://doi.org/10.1111/1467-7660.00125>

10. किंग, जी., किओहेन, आर. ओ., और वर्बा, एस. (2021)। *सामाजिक जाँच का डिजाइन: गुणात्मक अनुसंधान में वैज्ञानिक अनुमान*। प्रिंसटन विश्वविद्यालय प्रेस। <https://doi.org/10.1515/9781400830633>
11. कुमार, एस., एट अल. (2023)। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में जीविका की भूमिका: बिहार के मधुबनी जिले का एक केस स्टडी। *सामाजिक विज्ञान पत्रिका उन्नत अनुसंधान के लिए*, 3(6), 8-13. <https://doi.org/10.54741/ssjar.3.6.2>
12. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2020)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*। भारत सरकार।
13. मोमसेन, जे. (2020)। *लिंग और विकास*। रूटलेज। <https://doi.org/10.4324/9780429279522>
14. नैक, एम. (2022)। भारत के छोटे शहरों में युवा महिलाओं का काम और गतिशील आकांक्षाएँ। *सामाजिक परिवर्तन*, 52(2), 257-275. <https://doi.org/10.1177/00494925221081268>
15. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएस-5)। (2019-2021)। *बिहार राज्य तथ्य पत्र*। अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, मुंबई।
16. निकोल्स, सी. ई. (2022)। गतिशीलता और सशक्तिकरण की राजनीति: भारत में स्वयं सहायता समूहों का मामला। *ब्रिटिश भूगोलवेत्ताओं के संस्थान के लेनदेन*, 47(2), 470-483. <https://doi.org/10.1111/tran.12466>
17. नीति आयोग। (2021)। *एसडीजी भारत सूचकांक और डैशबोर्ड 2020-21*। भारत सरकार।
18. सेन, ए. (2005)। मानव अधिकार और क्षमताएँ। *मानव विकास पत्रिका*, 6(2), 151-166. <https://doi.org/10.1080/14649880500120491>
19. सिन्हा रॉय, एस. एस., एट अल. (2023)। भारत में महिला सशक्तिकरण के विकसित होते आयाम। *पबमेड सेंट्रल*। <https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC12250622/>
20. संयुक्त राष्ट्र महिला। (2020)। *महिला सशक्तिकरण सिद्धांत*। संयुक्त राष्ट्र महिला प्रकाशन।
21. विश्व बैंक। (2021)। *लैंगिक समानता और विकास*। वाशिंगटन, डीसी: विश्व बैंक। <https://doi.org/10.1596/978-1-4648-1735-2>